2023-24 BIHAR GK

Chapter-wise STUDY MATERIAL

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

सामान्य ज्ञान बिहार

अध्यायवार अध्ययन सामग्री

- सामान्य परिचय • इतिहास
- भौगोलिक संरचना एवं स्थिति
- कृषि व पशुपालन
- वन एवं वन्यजीव अभ्यारण
- खनिज एवं ऊर्जा संसाधन
- औद्योगिकीकरण एवं नियोजन
- आर्थिक समीक्षा एवं बजट
- प्रमुख योजनाएं • परिवहन एवं संचार
- जनगणना • राजव्यवस्था एवं प्रशासन
- कला एवं संस्कृति • पर्यटन
- शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद
- पुरस्कार एवं सम्मान, साहित्य एवं पत्रकारिता
- प्रसिद्ध व्यक्तित्व • समसामयिकी

विशेष आकर्षण-

बिहार राज्य की प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये राज्य आधारित प्रश्नों के अनुरूप अध्यायवार अध्ययन सामग्री का अद्वितीय संकलन

बिहार सामान्य ज्ञान वार्षिकी-2023

प्रधान संपादक
आनन्द कुमार महाजन

लेखन सहयोग
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
मो. : 9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा
सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने लक्ष्मी नारायण प्रिंटिंग प्रेस, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग अपेक्षित है

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 250/-

विषय-सूची

- बिहार : सामान्य परिचय 3-7
- बिहार : इतिहास..... 8-22
- बिहार : भौगोलिक संरचना एवं स्थिति 23--30
- बिहार : कृषि व पशुपालन..... 31-40
- बिहार : वन एवं वन्यजीव अभ्यारण..... 41-46
- बिहार : खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 47-53
- बिहार : औद्योगिकीकरण एवं नियोजन 54-58
- बिहार : आर्थिक समीक्षा एवं बजट 59-69
- बिहार : प्रमुख योजनाएं 70-75
- बिहार : परिवहन एवं संचार..... 76-81
- बिहार : जनगणना..... 82-91
- बिहार : राजव्यवस्था एवं प्रशासन..... 92-97
- बिहार : कला एवं संस्कृति 98-103
- बिहार : पर्यटन 104-108
- बिहार : शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद..... 109-117
- बिहार : पुरस्कार एवं सम्मान, साहित्य एवं पत्रकारिता..... 118-120
- बिहार : प्रसिद्ध व्यक्तित्व..... 121-123
- बिहार : समसामयिकी..... 124-128

बिहार : संक्षिप्त अवलोकन

सीमावर्ती राज्य एवं देश

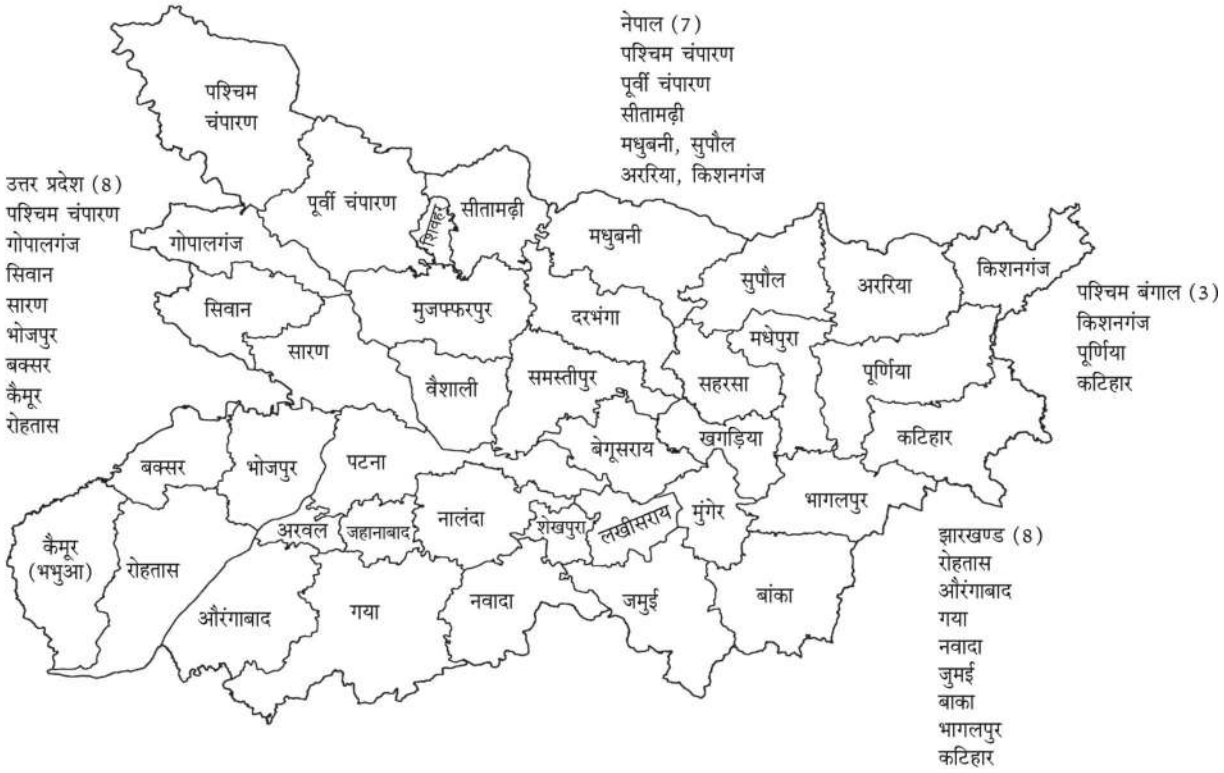

स्थापना दिवस	–	22 मार्च 22 मार्च, 1912 को बिहार प्रांत (ओडिशा सहित) के गठन की अधिसूचना जारी की गई (इससे पहले बिहार अविभाजित बंगाल का भाग था) इसीलिए 22 मार्च को बिहार राज्य का स्थापना दिवस मनाया जाता है।
नामकरण	–	बिहार नाम का प्रादुर्भाव बौद्ध संन्यासियों के ठहरने के स्थान 'विहार' शब्द से हुआ, जिसे विहार के स्थान पर इसके अपभ्रंश रूप बिहार से संबोधित किया जाता है।
राजधानी	–	पटना
क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में स्थान	–	12वाँ (जम्मू एवं कश्मीर राज्य पुनर्गठन के पश्चात्)
जनसंख्या की दृष्टि से भारत में स्थान	–	तीसरा (जनगणना 2011 के अनुसार)

भौगोलिक

अवस्थिति	–	$24^0$20'10" से $27^0$31'15" उत्तरी अक्षांश से लेकर $83^0$19'50" से $88^0$17'40" पूर्वी देशांतर तक।
क्षेत्रफल	–	94,163 वर्ग किमी
• ग्रामीण क्षेत्रफल	–	92,257.51 वर्ग किमी
• शहरी क्षेत्रफल	–	1905.49 वर्ग किमी
उत्तर से दक्षिण (लम्बाई)	–	345 किमी
पूर्व से पश्चिम (चौड़ाई)	–	483 किमी
सीमावर्ती राज्य	–	पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में नवगठित राज्य झारखण्ड (उत्तर में नेपाल देश है)
सबसे पूर्वी जिला	–	किशनगंज
सबसे पश्चिमी जिला	–	कैमूर
सबसे उत्तरी जिला	–	पश्चिम चम्पारण
सबसे दक्षिणी जिला	–	गया

राजनीतिक

शासन पद्धति	–	संसदीय शासन प्रणाली, द्विसदनीय (विधान सभा, विधान परिषद)
कुल लोकसभा सीटें	–	40
लोकसभा में सुरक्षित सीटें	–	6
राज्य सभा सीटें	–	16
विधानसभा सदस्यों की संख्या	–	243 (15 नवम्बर 2000 के बाद)
विधानसभा में सुरक्षित सीटें	–	40 (SC-38, ST-2)
विधान परिषद में सदस्यों की कुल संख्या	–	75

वर्तमान : पद नियुक्ति

राज्यपाल	**श्री फागु चौहान**
मुख्यमंत्री	**नीतीश कुमार**
उप-मुख्यमंत्री	**तेजस्वी प्रसाद यादव**
विधानसभा अध्यक्ष	**अवध बिहारी चौधरी (RJD)**
उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश	**न्यायमूर्ति संजय करोल**
राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष	**श्रीमती दिलमणि मिश्रा**
राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष	**न्यायमूर्ति विनोद कुमार सिन्हा**
राज्य लोकायुक्त	**श्याम किशोर शर्मा (8वें)**
राज्य निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष	**एच. आर. श्रीनिवास**
राज्य मुख्य सूचना आयुक्त	**नरेन्द्र कुमार सिन्हा**
अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष	**यूनुश हुसैन हकीम**

प्रशासनिक

प्रमंडल	9 (मगध, पटना, मुंगेर, दरभंगा, पूर्णिया, तिरहुत, सारण, भागलपुर,कोसी)
जिलें	38 (38वाँ जिला अरवल है)
अनुमंडल	101
महानगरों की संख्या	01 (पटना)
प्रखण्ड (अंचल)	534
पंचायत	8406
राजस्व ग्राम	45103
कुल नगर	199
पुलिस स्टेशन	853
सिविल पुलिस जिले	40
रेलवे पुलिस जिले	4
पंचायत समिति	534
जिला परिषद	38
नगर निगम	19
नगर परिषद	89
नगर पंचायत	155

प्राकृतिक

जलवायु	मानसूनी
ऋतुऐं	ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शीत ऋतु
प्राकृतिक प्रदेश	बिहार को तीन भू-आकृतिक प्रदेशों में बाँटा जा सकता है- (i) शिवालिक श्रेणी (ii) बिहार का मैदान (iii) दक्षिणी पठारी क्षेत्र
प्रमुख नदियाँ	गंगा, कोसी, सोन, गंडक, घाघरा, कर्मनाशा, बागमती, पुनपुन, फल्गु, इत्यादि।
प्रमुख नदी घाटी परियोजनायें	सोन परियोजना (बिहार), गंडक परियोजना (बिहार, उत्तर प्रदेश, नेपाल), कोसी जल विद्युत परियोजना (बिहार व नेपाल), बाण सागर परियोजना (बिहार, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश)।
वनों के प्रकार	1. आर्द्र पर्णपाती वन 2. शुष्क पर्णपाती वन
प्रमुख वन्य जीव अभयारण्य	गौतम बुद्ध अभयारण्य (गया), वाल्मीकि नगर अभयारण्य (प. चम्पारण), परमान डॉल्फिन अभयारण्य (अररिया), भीम बांध अभयारण्य (मुंगेर), कांवर झील पक्षी अभयारण्य (बेगूसराय), गोगाबिल पक्षी अभयारण्य (कटिहार), कैमूर अभयारण्य (रोहतास), विक्रमशीला गांगेय डॉल्फिन अभयारण्य (भागलपुर) इत्यादि।

अन्य

प्रमुख लोकनृत्य	रामलीला नाच, भगत नाच, लौंडा नाच कीर्तनिया नाच, पूजा आरती नाच, जादुर नाच, कर्मा नाच, यात्रा नाच, डोमकच नृत्य, कठघोड़वा नृत्य, जोगीड़ा नृत्य, धोबिया नृत्य, झिझिया नृत्य।
प्रमुख लोकगीत	1. ऋतु गीतों के नाम- कजरी, चैता, चतुर्मासा, बारहमासा आदि। 2. संस्कार गीत-सोहर, गौना, कोहबर, समदाउन, बेटी-विदाई आदि। 3. पेशागीत- जाँता-पिसाई, थपाई, छवाई, रोपनी, सोहनी आदि। 4. गाथागीत-लोरिकायन, सलहेस, बिजमैल, दीना-भदरी आदि। 5. पर्वगीत- छठ, तीज, जिउतिया, गोधन, रामनवमी, जन्माष्टमी, होली, दीवाली, बिरहा आदि।
प्रमुख पर्यटन स्थल	गया, पटना, नालंदा, राजगीर, वैशाली, मनेर, बिहार शरीफ, पावापुरी।
प्रमुख धार्मिक केन्द्र	बोधगया, पटना साहिब, पावापुरी, गया, फुलवारी शरीफ, मनेर, वैशाली इत्यादि।
प्रमुख मंदिर	बड़ी पटन देवी मंदिर (पटना), छोटी पटन देवी मंदिर (पटना), हनुमान मंदिर (पटना), अजगबीनाथ मंदिर (भागलपुर), अहिरौली मंदिर (बक्सर) इत्यादि।
प्रमुख मेलें	सोनपुर का पशु मेला, वैशाली मेला, हरिहर क्षेत्र का मेला,कार्तिक-पूर्णिमा का मेला, सौराठ का मेला, काकोलत का मेला, जानकी नवमी का मेला, मेष-संक्रांति का मेला इत्यादि।
प्रमुख बोली	मैथिली, मगधी, भोजपुरी, वज्जिका, अंगिका

बिहार : राजकीय प्रतीक

भाषा	–	हिन्दी, द्वितीय भाषा उर्दू
संविधान के 8वीं अनुसूची में शामिल बिहारी भाषाएं	–	हिन्दी, उर्दू व मैथिली।
पुष्प	–	गेंदा
पशु	–	बैल
पक्षी	–	गौरैया
वृक्ष	–	बोधिवृक्ष (पीपल)
खेल	–	कबड्डी
नृत्य	–	जाट-जटिन
राजकीय फल	–	मैंगो (आम)
राजकीय खाना	–	लिट्टी-चोखा
राजकीय मछली	–	देशी मांगुर
राजकीय गीत	–	मेरे भारत के कंठहार, तुझको शत्-शत् वंदन बिहार
राजकीय प्रार्थना		मेरी रफ्तार पे सूरज की किरण नाज करें.....
राज्य का महापर्व	–	छठ

बिहार में प्रथम

राज्यपाल	–	जयराम दास दौलत राम
मुख्यमंत्री	–	श्री कृष्ण सिंह
विधानसभा अध्यक्ष	–	राम दयालु सिंह
प्रथम मुस्लिम राज्यपाल	–	डा. जाकिर हुसैन
प्रथम महिला मुख्यमंत्री	–	श्रीमती राबड़ी देवी
प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश	–	न्यायमूर्ति सुश्री रेखा मनहरलाल दोशित
प्रथम आकाशवाणी केन्द्र	–	पटना, (26 जनवरी, 1948)
प्रथम दूरदर्शन केन्द्र		मुजफ्फरपुर (14 अगस्त, 1978)
प्रथम विश्वविद्यालय	–	नालंदा विश्वविद्यालय (प्राचीन बिहार का) पटना विश्वविद्यालय (आधुनिक बिहार का प्रथम विश्वविद्यालय)
प्रथम कृषि विश्वविद्यालय		राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय
प्रथम महाकवि		विद्यापति
प्रथम अंग्रेज यात्री		रॉल्फ फिंच

प्रथम सिख-गुरू यात्री	गुरू नानक
प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र	सर्वहितैषी
प्रथम अंग्रेजी दैनिक पत्र	द सर्च लाइट
प्रथम खगोलीय वेधशाला	इंदिरा गांधी तारामण्डल पटना
प्रथम गंगा डॉल्फिन संरक्षण केन्द्र	विक्रमशिला, भागलपुर

बिहार : विश्व में प्रथम

प्रथम गणराज्य	–	वज्जि संघ (वैशाली)
प्राचीन वैभवशाली नगर	–	पाटलिपुत्र
बौद्ध धर्म के प्रवर्तक	–	गौतम बुद्ध
सर्वाधिक प्राचीनतम स्तूप	–	पिपरहवा (भारत नेपाल सीमा पर)
विश्व में प्रथम बौद्ध संगीति	–	राजगृह
विश्व में प्रथम जैन संगीति	–	पाटलिपुत्र
प्रथम गणितज्ञ	–	आर्यभट्ट
विश्व का प्रथम सम्राट जिसने अस्त्र-शस्त्र का परित्याग किया	–	अशोक
विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय	–	मुंगेर

बिहार से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय	–	नालंदा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नालंदा (स्थापना-2013)
प्रथम ज्ञान विश्वविद्यालय	–	आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, (पटना- निर्माणाधीन)
प्रथम विधि विश्वविद्यालय	–	चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, पटना
बिहार का प्रथम सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क	–	पटना
बिहार का प्रथम टेक्सटाइल पार्क		भागलपुर (निर्माणाधीन)
बिहार में प्रथम भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	–	IIT-बिहटा
बिहार में प्रथम राष्ट्रीय मेडिकल संस्थान	–	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (निर्माणाधीन)
बिहार का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	–	बोध गया

बिहार के आठ जिले जिनका नाम उनके मुख्यालय से अलग है

जिला		**जिला मुख्यालय**
पश्चिम चम्पारण	–	बेतिया
पूर्वी चम्पारण	–	मोतिहारी
भोजपुर	–	आरा
कैमूर	–	भभुआ
सारण	–	छपरा
रोहतास	–	सासाराम
वैशाली	–	हाजीपुर
नालंदा	–	बिहार शरीफ

संभाग में शामिल जिलें

पटना (6)	मुंगेर (6)	मगध (5)	तिरहुत (6)	दरभंगा (3)	सारण (3)	पूर्णिया (4)	भागलपुर (2)	कोसी (3)
पटना	मुंगेर	गया	मुजफ्फरपुर	दरभंगा	सारण	पूर्णिया	भागलपुर	सहरसा
नालंदा	लखीसराय	जहानाबाद	वैशाली	मधुबनी	सीवान	अररिया	बांका	सुपौल
रोहतास	शेखपुरा	नवादा	सीतामढ़ी	समस्तीपुर	गोपालगंज	किशनगंज		मधेपुरा
कैमूर	जमुई	औरंगाबाद	पूवी चम्पारण			कटिहार		
भोजपुर	खगड़िया	अरवल	पश्चिमी चम्पारण					
बक्सर	बेगूसराय		शिवहर					

बिहार के प्रमुख कृषि संस्थान :

- राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय - पूसा (समस्तीपुर)
- तिरहुत कृषि कालेज - मुजफ्फरपुर
- फैकल्टी आफ फारेस्ट्री साइंस - समस्तीपुर
- बिहार कृषि विश्वविद्यालय - सबौर (भागलपुर)

बिहार के प्रसिद्ध व्यक्ति एवं उनसे संबंधित स्थल :

- वर्धमान महावीर - कुण्डलग्राम
- चन्द्रगुप्त मौर्य - पाटलिपुत्र
- चाणक्य/कौटिल्य - पाटलिपुत्र
- अश्वघोष - पाटलिपुत्र
- शेरशाह सूरी - सासाराम (आधुनिक रोहतास जिला)
- आर्यभट्ट - पाटलिपुत्र

महत्त्वपूर्ण व्यक्ति एवं उनके उपनाम :

- डा. राजेन्द्र प्रसाद - देशरत्न, अजातशत्रु
- कुंवर सिंह - बाबू
- जयप्रकाश नारायण - लोकनायक, लोकनाथ जेपी
- डा. श्रीकृष्ण - बिहार केसरी
- बाबू जगजीवन राम - बाबूजी
- रामधारी सिंह दिनकर - राष्ट्रकवि
- डा. अनुग्रह नारायण सिन्हा - बिहार विभूति, बड़े साहब
- जनार्दन प्रसाद सिंह - जस्टिस आफ पीस
- नागार्जुन - बाबा

बिहार एवं भारत के चुने हुए समाजार्थिक विकास संकेतांक

मद	इकाई	बिहार	भारत
1	2	3	4
जनसंख्या		**जनगणना 2011**	**जनगणना 2011**
जनसंख्या का घनत्व	प्रति. वर्ग किमी.	1106	382
लिंगानुपात	प्रति हजार पुरूष पर स्त्री (सं.)	918	943
जनसंख्या वृद्धि दर (2001–11)	प्रतिशत	25.42	17.70
कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या	प्रतिशत	88.7	68.8
कुल कार्यशील जनसंख्या में काश्तकार	प्रतिशत	20.72	24.6
कुल कार्यशील जनसंख्या में खेतिहर मजदूर	प्रतिशत	52.83	30.00
कुल कार्यशील जनसंख्या में पारिवारिक उद्योग कर्मी	प्रतिशत	4.06	3.8
कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति की जनसंख्या	प्रतिशत	15.9	16.6
कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या	प्रतिशत	1.3	8.6
साक्षरताः			
कुल	प्रतिशत	61.8	73.0
पुरूष	प्रतिशत	71.2	80.9
स्त्री	प्रतिशत	51.5	64.6

बिहार वन रिपोर्ट-2021

- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वनावरण एवं वृक्षावरण का हिस्सा **– 9721·79 वर्ग किमी. (10·33%)**
- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वनावरण का हिस्सा **– 7380·79 वर्ग किमी.(7·84%)**
- राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वृक्षावरण का हिस्सा **– 2341 वर्ग किमी. (2·49%)**
- राज्य में प्रतिशतता के आधार पर सर्वाधिक वनावरण वाले 3 जिले (घटते क्रम में) **1. कैमूर (31·56%), 2. जमुई (21·34%), 3. नवादा (20·72%)**
- राज्य में प्रतिशतता के आधार पर सबसे कम वनावरण वाले तीन जिले (बढ़ते क्रम में) **— 1. शेखपुरा (0·17%), 2. बक्सर (0·35%), 3. सिवान (0·35%)**
- राज्य में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले तीन जिले (घटते क्रम में) **— 1. कैमूर (1051·56 वर्ग किमी), 2. प. चम्पारण (903·34 वर्ग किमी), 3. रोहतास (669·91 वर्ग किमी)**
- राज्य में सबसे कम वन क्षेत्रफल वाले तीन जिले (बढ़ते क्रम में) **— 1. शेखपुरा (1·19 वर्ग किमी), 2. अरवल (4·14 वर्ग किमी), 3. जहानाबाद (4·43 वर्ग किमी)**

प्राचीन बिहार

- ऐतिहासिक दृष्टि से बिहार प्राचीन भारत का एक समृद्ध एवं वैभवशाली क्षेत्र रहा है।
- ऐतिहासिक दृष्टि से बिहार की समृद्धि को देखते हुए इसे भारतीय इतिहास का गर्भगृह कहा जाता है।
- प्रागैतिहासिक काल से ही यह मानव सभ्यता एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था जिसका देश के इतिहास और सांस्कृतिक जीवन में निर्णायक भूमिका रही है।
- प्राचीन इतिहास में बिहार तीन प्रमुख महाजनपदों मगध, अंग और वज्जि संघ के रूप में बंटा हुआ था।
- मगध और लिच्छवी गणराज्य के शासनकाल की कार्यपद्धति से ही भारत में आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था की शुरूआत हुई।
- दुनिया का पहला गणराज्य (लोकतांत्रिक व्यवस्था का जनक) वैशाली बिहार का ही अंग है।
- बिहार का वर्णन हमारे दो महान ग्रंथों रामायण एवं महाभारत में किया गया है।
- एक ओर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने बक्सर के निकट गुरुकुल में ऋषि विश्वामित्र से शिक्षा ग्रहण की थी तो दूसरी ओर बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध और जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर को बिहार की इस ऐतिहासिक भूमि में ही ज्ञान प्राप्त हुआ था।

काल खण्ड के अनुसार बिहार के प्राचीन इतिहास को निम्न भागों में बाँटा जा सकता है-

(1) पूर्व पाषाण युग (2) मध्य पाषाण युग
(3) नव पाषाण युग (4) ताम्र पाषाण युग
(5) वैदिक काल (6) महाजनपद काल

वेद/उपनिषद् से लिए गए आदर्श वाक्य		
1.	ऊँ भूर्भुवः स्वः (गायत्री मंत्र)	ऋग्वेद
2.	सत्यमेव जयते	मुण्डकोपनिषद्
3.	वसुधैव कुटुम्बकम्	मुण्डकोपनिषद
4.	अतिथि देवो भव	तैत्तिरीय उपनिषद्
5.	मातृ देवो भव	तैत्तिरीय उपनिषद्
6.	सर्वेभवन्तु सुखिनः	वृहदारण्यक उपनिषद्
7.	तमसो मा ज्योतिर्गमय	वृहदारण्यक उपनिषद्

वैदिक कालीन नदियाँ

नदी	प्राचीन नाम
सतलज	शतुद्रि
व्यास	विपाशा
रावी	परुष्णी
झेलम	वितस्ता
चेनाब	अस्किनी
गंडक	सदानीरा
सिन्ध	सिन्धु
घग्गर	दृशद्वती/सरस्वती

आर्यों द्वारा क्षेत्र का नामकरण	
हरियाणा-पंजाब का क्षेत्र	ब्रह्मावर्त
गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र	ब्रह्मर्षि देश
हिमालय से विंध्य तक का क्षेत्र	मध्य देश
मध्य देश + बिहार एवं बंगाल का क्षेत्र	आर्यावर्त

महाजनपद काल में बिहार

- लगभग छठीं शताब्दी ई.पू. में बुद्ध के जन्म से पूर्व भारतवर्ष 16 महाजनपदों में बंटा था।
- 16 महाजनपदों का उल्लेख हमें बौद्ध-ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में मिलता है।
- उस समय भारत के सोलह महाजनपदों में से तीन मगध, अंग और वज्जि बिहार में थे।

16 महाजनपद

	महाजनपद	राजधानी	विस्तार
1.	अंग	चम्पा	बिहार में भागलपुर एवं मुंगेर के वर्तमान प्रमंडल तथा झारखंड के साहिबगंज एवं गोड्डा जिलों के कुछ हिस्से
2.	मगध	राजगृह/ गिरिव्रज	वर्तमान पटना और गया के प्रमंडलों वाले जिले
3.	वज्जि	वैशाली	आठ कबीलाई गणराज्यों का संघ, बिहार में गंगा नदी के उत्तर में स्थित था।
4.	मल्ल	कुशीनगर और पावा	यह भी एक गणराज्य संघ था जिसमें आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया, बस्ती, गोरखपुर और सिद्धार्थनगर जिले आते थे।
5.	काशी	वाराणसी	वर्तमान में बनारस का इलाका।
6.	कोशल	श्रावस्ती	वर्तमान का फैजाबाद, गोंडा, बहराइच आदि जिले
7.	वत्स	कौशाम्बी	वर्तमान समय के कौशाम्बी, प्रयागराज और मिर्जापुर आदि जिले इसके अंतर्गत आते थे।
8.	चेदी	सुक्तिमति	आधुनिक बुंदेलखंड का क्षेत्र।
9.	कुरु	इंद्रप्रस्थ	यमुना नदी के पश्चिम में पड़ने वाले इलाके हरियाणा और दिल्ली।

10.	पांचाल	अहिछत्र/ काम्पिल्य	पश्चिमी उत्तर प्रदेश से यमुना नदी के पूर्व के इलाके
11.	शूरसेन	मथुरा	इसमें आज का ब्रजमंडल क्षेत्र शामिल था।
12.	मत्स्य	विराटनगर	इसमें राजस्थान के अलवर, भरतपुर और जयपुर के इलाके थे।
13.	अवंती	उज्जैनी/ महिष्मति	आधुनिक मालवा (राजस्थान- मध्य प्रदेश) का क्षेत्र।
14.	अश्मक	पाटन/ पोतन	महाराष्ट्र, नर्मदा और गोदावरी नदियों के बीच
15.	गांधार	तक्षशिला/ पुष्कलावती	इसके अंतर्गत पाकिस्तान के पश्चिमी इलाके और पूर्वी अफगानिस्तान के इलाके आते थे।
16.	कंबोज	राजपुर/ हाटक	इसकी पहचान पाकिस्तान के हजारा जिले के तौर पर की गई है।

प्राचीन बिहार में धर्म सुधार आन्दोलन

- **ईसा पूर्व छठी शताब्दी** के आस-पास नई चिन्तन धाराओं ने जन्म लिया जिसे इतिहास में **धार्मिक सुधार आन्दोलन** के नाम से जाना जाता है।
- उत्तर वैदिक काल **कर्मकाण्डीय जटिलताओं** और **जातीय विषमताओं** के साथ-साथ अनेक सामाजिक बुराइयों से भी ग्रसित हो चुका था, जिससे लोग त्रस्त थे।
- **बौद्ध** और **जैन धर्म** ने जब शांति और सामाजिक समरसता का प्रचार किया तो लोगों ने खुले दिल से स्वागत किया।
- बुद्ध और महावीर दोनों लगभग समकालीन थे और दोनों ने ही इस बात पर बल दिया कि वास्तविक सुख भौतिक समृद्धि या धार्मिक अनुष्ठानों से नहीं बल्कि दया, दान, मितव्ययिता जैसे मानवीय सरोकार वाले अच्छे सामाजिक कर्मों से मिलता है।

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक		
	घटना	**चिह्न/प्रतीक**
♦	जन्म	कमल व साँड़
♦	गृह त्याग	घोड़ा
♦	ज्ञान	पीपल (बोधिवृक्ष)
♦	निर्वाण	पद चिह्न
♦	मृत्यु (महापरिनिर्वाण)	स्तूप

बुद्ध से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएं एवं उनके प्रतीक		
♦	हाथी	माता के गर्भ में आना
♦	कमल	बुद्ध का जन्म
♦	घोड़ा	गृह त्याग
♦	बोधिवृक्ष	ज्ञान प्राप्ति
♦	धर्मचक्र	प्रथम उपदेश
♦	भूमिस्पर्श	इंद्रियों पर विजय
♦	एक करवट सोना	महापरिनिर्वाण

बुद्ध कालीन गणराज्य		
1.	कपिलवस्तु	शाक्य
2.	सुमसुमार पर्वत	भग्ग
3.	केसपुत्र	कालाम
4.	रामग्राम	कोलिय
5.	कुशीनारा	मल्ल
6.	पावा	मल्ल
7.	पिप्पलिवन	मोरिय
8.	अल्लकप्प	बुलि
9.	वैशाली	लिच्छवि
10.	मिथिला	विदेह

बौद्ध धर्म के परवर्ती धार्मिक संप्रदाय		
	संप्रदाय	**संस्थापक**
♦	आजीवक	मक्खलिपुत्र गोशाल
♦	घोर अक्रियावादी	पूरन कश्यप
♦	उच्छेदवादी	अजित केस कम्बलिन
♦	संदेहवादी	संजय वेलट्ठिपुत्र
♦	नित्यवादी	पकुधकच्चायन

बौद्धधर्म के आष्टांगिक मार्ग		
1.	सम्यक् दृष्टि	वास्तविक स्वरूप का ज्ञान
2.	सम्यक् संकल्प	लोभ, द्वेष, हिंसा मुक्त विचार
3.	सम्यक् वाक्	अप्रिय वचन न बोलना
4.	सम्यक् कर्मांत	उचित एवं सद्कर्म करना
5.	सम्यक् आजीव	सदाचारयुक्त आजीविका
6.	सम्यक् व्यायाम	शारीरिक/मानसिक व्यायाम
7.	सम्यक् स्मृति	सात्विक भाव
8.	सम्यक् समाधि	एकाग्रता

बौद्ध संगीतियाँ	
प्रथम	
स्थान	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)
समय	483 ई.पू.
अध्यक्ष	महाकस्सप
शासनकाल	अजातशत्रु (हर्यक वंश)
उद्देश्य	बुद्ध के उपदेशों को दो पिटकों- सुत्त पिटक तथा विनय पिटक में संकलित करना

द्वितीय	
स्थान	वैशाली
समय	383 ई.पू.
अध्यक्ष	सब्बकामी (सर्वकामी)
शासनकाल	कालाशोक (शिशुनाग वंश)
उद्देश्य	बौद्ध धर्म का स्थविर एवं महासांघिक दो भागों में विभाजन
तृतीय	
स्थान	पाटलिपुत्र
समय	247 ई.पू.
अध्यक्ष	मोग्गलिपुत्त तिस्स
शासनकाल	अशोक (मौर्यवंश)
उद्देश्य	संघ भेद के विरुद्ध कठोर नियमों का प्रतिपादन एवं तीसरा पिटक अभिधम्म पिटक जोड़ना
चतुर्थ (बिहार से बाहर)	
स्थान	कश्मीर के कुण्डलवन
समय	लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी
अध्यक्ष	वसुमित्र एवं अश्वघोष (उपाध्यक्ष)
शासनकाल	कनिष्क (कुषाण वंश)
उद्देश्य	बौद्ध धर्म का दो सम्प्रदायों हीनयान तथा महायान में विभाजन

जैन धर्म

प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक	
तीर्थंकर	**प्रतीक**
ऋषभदेव (प्रथम)	वृषभ
अजितनाथ (द्वितीय)	हाथी
सम्भवनाथ (तृतीय)	घोड़ा
शांतिनाथ (सोलहवें)	हिरण
अरिष्टनेमि (बाईसवें)	शंख
पार्श्वनाथ (तेईसवें)	सर्पफण
महावीर स्वामी (चौबीसवें)	सिंह

जैन संगीतियां		
	प्रथम	**द्वितीय**
वर्ष	तीसरी सदी ईसा पूर्व	512 ई.
स्थान	पाटलिपुत्र (बिहार)	वल्लभी (गुजरात)
अध्यक्ष	स्थूल भद्र	देवर्धि क्षमाश्रमण
परिणाम	12 अंगों का संकलन जैन धर्म का दो संप्रदायों में विभाजन श्वेताम्बर एवं दिगंबर	धर्मग्रंथों का अंतिम संकलन एवं लिपिबद्ध।

पंच महाव्रत/अणुव्रत	
अहिंसा	जीवों की हत्या न करना
सत्य	सदा सत्य बोलना
अपरिग्रह	संपत्ति का संग्रह न करना
अस्तेय	चोरी न करना
ब्रह्मचर्य	इन्द्रियों पर नियंत्रण
त्रिरत्न	
सम्यक् दर्शन	वास्तविक ज्ञान
सम्यक् ज्ञान	सत्य में विश्वास
सम्यक् आचरण	सुख-दुःख के प्रति समभाव

बौद्ध धर्म और जैन धर्म में समानता

1. अहिंसा और शांति दोनों ही धर्मों का मूल था।
2. दोनों का उदय यज्ञीय कर्मकांड, ब्राह्मणवाद, जातिप्रथा और छुआछूत के विरोध में हुआ।
3. दोनों ही ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते।
4. दोनों ने ही पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया है।
5. इन दोनों ही धर्मों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए जनता की सरल भाषा का प्रयोग किया।
6. दोनों धर्मों की स्थापना क्षत्रियों ने की क्योंकि बुद्ध और महावीर दोनों क्षत्रिय कुल के थे।
7. दोनों ही समकालीन थे और गृहत्याग के समय दोनों की आयु लगभग समान थी।

बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में असमानताएं		
	बौद्ध धर्म	**जैन धर्म**
1.	बौद्ध के उपदेश की भाषा पालि थी	महावीर के उपदेश की भाषा प्राकृत थी
2.	विदेशों में प्रसार अधिक हुआ, भारत में नहीं	प्रसार भारत में ही हुआ विदेशों में कहीं नहीं
3.	संघ एवं भिक्षुओं पर आधारित था	अनुयायियों पर आधारित था
4.	ईश्वर एवं आत्मा के अस्तित्व को नकारते हैं	आत्मा को शाश्वत् मानते हैं
5.	न अधिक सुख एवं न अधिक दुःख अर्थात् मध्यम मार्ग के समर्थक	कठोर व्रत पालन एवं उदासीन शारीरिक दुःख के समर्थक
6.	बौद्ध धर्म मोक्ष को मध्यम मार्ग के रूप में स्वीकार करता है	जैन धर्म मोक्ष की सिद्धावस्था में शरीर का त्याग मानता है
7.	बौद्ध धर्म में नग्न मूर्तियों की पूजा नहीं होती	इस धर्म के अनुयायी महावीर की नग्न मूर्तियों के उपासक हैं
8.	अहिंसा का नियम व्यावहारिक था	अहिंसा का नियम कठोरतम था
9.	अष्टांगिक मार्ग से गृहस्थ भी निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं	जैन धर्म के अनुसार गृहस्थ के लिए निर्वाण प्राप्त करना असम्भव था

मगध साम्राज्य

- मगध राज्य के प्रारंभिक इतिहास का सर्वप्रथम उल्लेख महाभारत में मिलता है। इसमें मगध के शासक जरासंध का उल्लेख है, जिसे भीम ने द्वन्द्व-युद्ध में परास्त किया था।
- महाभारत में गंगा के उत्तर में विदेह राज्य और दक्षिण में मगध राज्य का उल्लेख किया गया है।
- मगध प्राचीनकाल से ही राजनीतिक उठापटक के साथ धार्मिक एवं सामाजिक जागृति का केन्द्र बिन्दु रहा है।
- मगध बुद्ध काल में शक्तिशाली राजतंत्रों में एक था जो आज के दक्षिणी बिहार में स्थित था।
- कालांतर में यह उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद बन गया जो गौरवमयी इतिहास, राजनीतिक एवं धर्म का वैश्विक केन्द्र बन गया।
- मगध महाजनपद की सीमा उत्तर में गंगा से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक थी पूर्व में चम्पा तथा पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत थी।
- मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह थी जो पांच पहाड़ियों से घिरा नगर था।
- कालांतर में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में स्थापित हुई।
- मगध ने तत्कालीन शक्तिशाली राज्य कौशल, वत्स व अवंती को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- एक समय मगध का विस्तार अखण्ड भारत के रूप में हो गया और प्राचीन मगध का इतिहास ही भारत का इतिहास बन गया।
- मगध साम्राज्य का उत्कर्ष करने में कई राजवंशों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

प्रमुख शासक एवं राजवंश

राजवंश	शासक
• हर्यक वंश	बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयभद्र, अनिरुद्ध, मुण्ड/मंडक, नागदशक
• शिशुनाग वंश	शिशुनाग, कालाशोक, नन्दिवर्धन
• नंद वंश	महापद्मनंद, पण्डुक, पाण्डुगति, भूतपाल, राष्ट्रपाल, गोविनाशक द्सिधक, कैवर्त्त एवं घनानन्द

मौर्य काल में बिहार (323 ई.पू. से 185 ई.पू.)

मेगास्थनीज की इंडिका में वर्णित जातियाँ

- ब्राह्मण तथा दार्शनिक
- कृषक वर्ग
- ग्वाले तथा आखेटक
- व्यापारी तथा श्रमजीवी कारीगर एवं शिल्पी
- योद्धा अथवा सैनिक
- निरीक्षक अथवा गुप्तचर
- मंत्री एवं परामर्शदाता सभासद

बिन्दुसार को प्राप्त उपाधि

ग्रंथ	उपाधि
• यूनानी लेखों में	अमित्रोचेट्स
• संस्कृत ग्रन्थ में	अमित्रघात
• वायुपुराण में	भद्रसार/मद्रसार
• जैन ग्रन्थ में	सिंहसेन

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत

1. राजा या स्वामी	कौटिल्य ने राजा को राज्य का केन्द्र व अभिन्न अंग माना है तथा उन्होंने राजा की तुलना शीर्ष (सर्वोपरि) से की है। उसका मानना है कि राजा को दूरदर्शी, आत्मसयंमी, कुलीन, स्वस्थ तथा बौद्धिक गुणों से संपन्न होना चाहिए। वह राजा को कल्याणकारी तथा जनता के प्रति उत्तरदायी होने की सलाह देता है, क्योंकि उसके अनुसार राजा कर्तव्यों से बंधा होता है। कौटिल्य के अनुसार राजा को सर्वोपरि होने के बावजूद भी उसे निरंकुश शक्तियाँ नहीं देना चाहिए।
2. अमात्य या मंत्री	कौटिल्य ने अमात्य और मंत्री दोनों की तुलना 'आंख' से की है। अमात्य उसी व्यक्ति को चुना जाना चाहिए जो अपनी जिम्मेदारियों को संभाल सके तथा राजा के कार्यों में उसके सहयोगी की भूमिका निभा सके।
3. जनपद	कौटिल्य ने इसकी तुलना 'पैर' से की है। जनपद का अर्थ है 'जनयुक्त भूमि' अर्थात् जनसंख्या तथा भूभाग दोनों को जनपद माना है। कौटिल्य ने दस गाँवों के समूह में 'संग्रहण' दो सौ गाँवों के समूह के बीच 'सार्वत्रिक' चार सौ गाँवों के समूह के बीच एक 'द्रोणमुख' तथा आठ सौ गाँवों में एक 'स्थानीय' अधिकारी की नियुक्ति की बात कही है।
4. दुर्ग	कौटिल्य ने दुर्ग की तुलना 'बांहों' या 'भुजाओं' से की है। कौटिल्य ने चार प्रकार के दुर्गों की चर्चा की हैः- 1. औदक दुर्ग-जिसके चारों ओर पानी हो। 2. पार्वत दुर्ग-जिसके चारों ओर चट्टाने हो। 3. धान्वन दुर्ग-जिसके चारों ओर ऊसर भूमि हो। 4. वन दुर्ग-जिसके चारों ओर वन तथा जंगल हो।
5. कोष	इसकी तुलना कौटिल्य ने 'मुख' से की है। उन्होंने कोष को राज्य का मुख्य अंग इसलिए माना है क्योंकि कोष से ही कोई राज्य वृद्धि करता है तथा शक्तिशाली बने रहने के लिए कोष के द्वारा ही अपनी सेना का भरण-पोषण करता है। उसने कोष में वृद्धि का मार्ग करारोपण को बताया हैं जिसमें प्रजा को अनाज का छठा भाग, व्यापार का दसवां भाग तथा पशुधन के लाभ का पचासवां भाग राजा को कर के रूप में अदा करना चाहिए।

6. दंड या सेना	कौटिल्य ने सेना की तुलना 'मस्तिष्क' से की है। कौटिल्य ने सेना के चार प्रकार बताए हैं–हस्ति सेना, अश्व सेना, रथ सेना तथा पैदल सेना। उनके अनुसार सेना ऐसी होनी चाहिए जो साहसी हो, बलशाली हो तथा जिसके हर सैनिक के हृदय में देशप्रेम हो तथा वीरगति को प्राप्त हो जाने पर जिसके परिवार को उस पर अभिमान हो।
7. मित्र	मित्र को कौटिल्य ने 'कान' कहा है। उसके अनुसार राज्य की उन्नति के लिए तथा विपत्ति के समय सहायता के लिए राज्य को मित्रों की आवश्यकता होती है।

अशोक द्वारा भेजे गए बौद्ध धर्म प्रचारक

धर्म प्रचारक	स्थान
मज्झन्तिक	कश्मीर-गांधार
मज्झिम	हिमालय
सोन व उत्तरा	सुवर्णभूमि
रक्षित	उत्तरी कर्नाटक (बनवासी)
धर्म-रक्षित	अपरांतक
महारक्षित	यवनराष्ट्र
महाधर्म रक्षित	महाराष्ट्र
महादेव	मैसूर
महेन्द्र एवं संघमित्रा	श्रीलंका

अशोक के स्तम्भ लेख एवं उनमें वर्णित विषय

शिलालेख	वर्णित विषय
प्रथम	अहिंसा पर बल, पशुबलि की निंदा एवं समारोह पर प्रतिबंध का उल्लेख है।
दूसरा	समाज कल्याण हेतु कार्य, मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सा की व्यवस्था एवं पड़ोसी राज्य चोल; पाण्ड्य; सतियपुत्त और केरलपुत्र (चेर) का वर्णन।
तीसरा	इसमें राजकीय अधिकारियों युक्त, रज्जुक तथा प्रादेशिकों को यह आदेश दिया गया कि वे हर पांचवें वर्ष राज्य के दौरा पर जाएं। ब्राह्मणों, मित्रों, सम्बंधियों तथा श्रमणों से सदा उदारतापूर्ण व्यवहार करें।
चौथा	भेरीघोष (युद्ध) की जगह धम्मघोष (शांति) की घोषणा की गई है। पशु हत्या को बहुत हद तक रोके जाने का दावा है।
पांचवां	शासन के 14वें वर्ष धम्ममाहामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की चर्चा है।
छठवां	इसमें आत्म-नियंत्रण की शिक्षा दी गई है। अधिकारी को हर समय और कहीं भी सेवाभाव से तत्पर रहना बताया गया है।
सातवां	सभी संप्रदायों के लिए सहिष्णुता का भाव रखने पर बल दिया गया है।
आठवां	अशोक के धर्म (तीर्थ) यात्राओं का उल्लेख। अशोक के बोधगया की यात्रा।
नवां	सच्ची भेंट एवं सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख। धम्म में सभी दासों एवं नौकरों के प्रति दयाभाव रखना।
दशम्	इसमें ख्याति एवं गौरव की निंदा की गयी है तथा धम्मकीर्ति की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है।
ग्यारहवां	इसमें धर्म के वरदान को सर्वोत्कृष्ट एवं धम्म की व्याख्या की गई है।
बारहवां	सभी प्रकार के विचारों का सम्मान, विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समन्वय एवं महिला महामात्रों की नियुक्ति।
तेरहवां	कलिंग युद्ध का वर्णन, युद्ध में एक लाख लोगों के मरने एवं अशोक के हृदय परिवर्तन की बात के साथ ही यवन राजाओं का वर्णन है।
चौदहवां	प्रजा को स्वतंत्र धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करना। इसमें अपने प्रजा के प्रति पितृवत् प्रेमभाव को अपनाने पर बल दिया गया है।

अशोक के लघु स्तम्भ लेख

लघु स्तम्भ लेख	स्थान
टोपरा	उत्तर प्रदेश
मेरठ	उत्तर प्रदेश
प्रयाग	उत्तर प्रदेश
लौरिया अरेराज	बिहार (चम्पारण)
लौरिया नंदनगढ़	बिहार (चम्पारण)
रामपुरवा	बिहार (चम्पारण)

दिव्यावदान के अनुसार अशोक के उत्तराधिकारी

1. दशरथ
2. सम्प्रति
3. शालिशूक
4. देववर्मन
5. शतधनुष
6. वृहद्रथ

मौर्य राजधानी

प्रान्त	राजधानी	वर्तमान स्थिति
प्राच्य	पाटलिपुत्र	बिहार
उत्तरापथ	तक्षशिला	पाकिस्तान
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि	आंध्र प्रदेश
अवन्ति राष्ट्र	उज्जयिनी	मध्य प्रदेश
कलिंग	तोसली	ओडिशा

मौर्यकालीन नगरीय प्रशासन की समितियां

समिति	विशेष
प्रथम समिति	उद्योग शिल्पों का निरीक्षण
द्वितीय समिति	विदेशियों की देखरेख
तृतीय समिति	जनगणना
चतुर्थ समिति	व्यापार वाणिज्य की व्यवस्था
पंचम समिति	विक्रय की व्यवस्था, निरीक्षण
षष्ठम् समिति	बिक्री कर व्यवस्था

मौर्यकालीन मंत्रिपरिषद्

1. अमात्य	प्रत्येक विभाग का प्रमुख
2. पुरोहित	धर्म एवं दान विभाग का प्रधान
3. सेनापति	सैन्य विभाग का प्रधान
4. युवराज	राजपुत्र
5. दौवारिक	राजकीय द्वार रक्षक
6. अंतर्वेशिक	अन्तःपुर का अध्यक्ष
7. समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान
8. सन्निधाता	राजकीय कोष का अध्यक्ष
9. प्रशास्ता	राजकीय आज्ञाओं को लिपिक करने वाला
10. प्रदेष्टि	कमिश्नर
11. पौर	नगर का कोतवाल
12. व्यावहारिक	प्रमुख न्यायाधीश
13. नायक	नगर रक्षा का अध्यक्ष
14. कर्मान्तिक	उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष
15. दण्डपाल	सेना का सामान एकत्र करने वाला
16. दुर्गपाल	दुर्ग रक्षक
17. अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक

मौर्यकालीन विभागाध्यक्ष

1. अक्षपाटलाध्यक्ष	लेखा विभाग का प्रधान
2. सीताध्यक्ष	कृषि विभाग का प्रधान
3. अकराध्यक्ष	खनिज विभाग का प्रधान
4. लक्षणाध्यक्ष	टकसाल का अध्यक्ष
5. लवणाध्यक्ष	नमक से संबंधित विभाग
6. विविताध्यक्ष	चारागाह का अध्यक्ष
7. नवाध्यक्ष	नावों एवं जहाजों का अध्यक्ष
8. पत्तनाध्यक्ष	बंदरगाहों के विभागों का अध्यक्ष
9. अन्तपाल	सीमा प्रदेश की देखभाल करने वाला
10. पौतवाध्यक्ष	बाट एवं माप विभाग का अध्यक्ष
11. सूत्राध्यक्ष	कताई-बुनाई विभाग का अध्यक्ष
12. सूनाध्यक्ष	बूचड़खाने का अध्यक्ष
13. गणिकाध्यक्ष	वेश्याओं के विभाग का अध्यक्ष
14 बंधकाराध्यक्ष	जेलखाने का अध्यक्ष

मौर्य साम्राज्य का बौद्ध धर्म के साथ संबंध

- मौर्य साम्राज्य का बौद्ध धर्म के साथ अन्योनाश्रय संबंध रहा है। सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद अहिंसा और शांति के अनुगामी बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि', 'धम्मं शरणम् गच्छामि', 'संघम् शरणम् गच्छामि' एवं 'जियो और जीने दो' जैसे लोक कल्याणकारी आदर्शों को अपने राजधर्म में शामिल किया।
- बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अशोक ने बौद्ध नीतियों एवं उनके आदर्शों के प्रचार-प्रसार के लिए भारत के बाहर भी कई देशों में अपने 'धम्ममहामात्रों' को भेजा। यहां तक कि इसके प्रचार के लिए अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को भी लगाया।
- सारनाथ में संरक्षित 'सारनाथ सिंह स्तंभ' में चतुर्सिंह के नीचे भगवान बुद्ध के जीवन में संबंधित चार पशुओं-हाथी, घोड़ा, बैल तथा सिंह/शेर की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। इनमें हाथी बुद्ध के गर्भस्थ (गर्भ में) होने का, बैल उनके जन्म का, अश्व उनके गृहत्याग का तथा सिंह सार्वभौमसत्ता का प्रतीक है। इसे सम्राट अशोक ने भगवान बुद्ध द्वारा 'धम्मचक्रप्रवर्तन' यानी प्रथम उपदेश देने की ऐतिहासिक घटना की स्मृति में बनवाया था।
- कई बौद्ध स्थापत्यों में सांची, भरहुत, सारनाथ जैसे प्रमुख स्तूपों के अलावा अनेक बौद्ध विहारों का निर्माण मौर्य राजाओं द्वारा किया गया था।
- बौद्ध भिक्षुओं के वर्षावास अथवा विश्राम स्थल (विहार) के रूप में बराबर एवं नागार्जुनी पहाड़ियों में कई रॉक कट गुफाओं का भी निर्माण किया गया था।

मौर्य प्रशासन के घटक/इकाई

↓
केंद्र → राजा
↓
प्रांत → कुमार/युवराज
↓
मंडल → प्रदेष्टा/प्रादेशिक
↓
आहार/विषय → विषयपति
↓
स्थानीय → 800 ग्रामों का समूह
↓
द्रोणमुख → 400 ग्रामों का समूह
↓
खार्वटिक → 200 ग्रामों का समूह
↓
संग्रहण → 10 ग्रामों का समूह
↓
ग्राम → ग्रामणी

- गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था। श्रीगुप्त का उत्तराधिकारी घटोत्कच था।
- चंद्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.) गुप्तवंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था। इसने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
- गुप्त संवत् (319-320 ई.) की शुरुआत चंद्रगुप्त प्रथम ने किया था।
- चंद्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त गुप्त साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा।
- हरिषेण समुद्रगुप्त का दरबारी कवि था जिसने 'प्रयाग प्रशस्ति' की रचना किया।

- समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' भी कहा जाता है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने रामगुप्त की हत्या कर गुप्त सिंहासन पर बैठा
- चंद्रगुप्त द्वितीय ने नागवंशीय कन्या कुबेरनागा से विवाह किया, जिससे प्रभावती गुप्ता नामक पुत्री का जन्म हुआ।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान भारत आया था।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद उसका पुत्र कुमारगुप्त शासक बना। इसने नालंदा महाविहार की स्थापना किया।
- कुमारगुप्त के बाद उसका पुत्र स्कंदगुप्त (455-467) गद्दी पर बैठा इसी के शासन काल में हूणों का आक्रमण हुआ।
- भानुगुप्त के एरण अभिलेख (510 ई.) से सती प्रथा का पहला अभिलेखीय प्रमाण मिलता है।

गुप्तकालीन प्रशासन

- गुप्त शासन की सबसे बड़ी प्रादेशिक इकाई 'देश' थी जिसके प्रशासक को गोप्ता कहा जाता था। दूसरी प्रादेशिक इकाई भुक्ति थी जिसके शासक को गोप्ता कहा जाता था।
- भुक्ति के नीचे 'विषय' होता था जिसका प्रमुख विषयपति कहलाते थे।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। ग्राम प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी ग्रामपति या महत्तर होता था।
- ग्राम सभा को मध्य भारत में 'पंचमंडली तथा बिहार मे ग्राम जनपद' कहा जाता था।

गुप्तकालीन अधिकारी एवं विभाग	
अधिकारी	**विभाग**
महादंडनायक	न्यायाधीश
संधिविग्रहिक	युद्ध व शांति का मंत्री
महाबलाधिकृत	सेनापति
दंडपाशिक	पुलिस विभाग
विनयस्थिति स्थापक	शिक्षा व धर्म संबंधी अधिकारी
महाप्रतिहार	राज्य प्रासाद का अधिकारी
महाक्षपटलिक	लेखा विभाग का अधिकारी
ध्रुवाधिकरण	भूमिकर संग्रह अधिकारी
शौल्किक	सीमा शुल्क का अधिकारी

गुप्तकालीन समाज

- गुप्तकालीन समाज परंपरागत चार वर्णों में विभक्त था। चारों वर्णों का आधार गुण और कर्म न होकर जन्म था।
- गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था की सबसे छोटी ईकाई परिवार थी।
- फाह्यान के वर्णन के अनुसार, गुप्त काल में अस्पृश्य वर्ग था। इन्हें 'अंत्यज' तथा 'चांडाल' कहा गया है।
- नई जातियों में भूमि अनुदान के कारण कायस्थों का उदय हुआ।
- कायस्थों का सर्वप्रथम उल्लेख 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में मिलता है।
- गुप्तकाल में 'देवदासी प्रथा' का प्रचलन था। कालिदास के ग्रंथ 'मेघदूत' में उज्जैन के महाकाल मंदिर में देवदासी रखे जाने का उल्लेख मिलता है।
- कामसूत्र एवं मुद्राराक्षस' में गणिकाओं तथा वेश्याओं का उल्लेख है।
- गुप्तकाल में दास प्रथा प्रचलित थी। मनु 7 प्रकार के तथा नारद ने 15 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।

गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था

- गुप्तकालीन आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार 'कृषि' था।
- निवर्तन, कुल्यावाय, द्रोणवाप तथा आढ़वाप भूमि माप का पैमाना था।
- अमरकोश में 12 प्रकार की भूमि का उल्लेख मिलता है।

भूमि के प्रकार	
क्षेत्र	खेती के लिये उपयुक्त भूमि
खिल	जो भूमि जोती नहीं जाती थी
वास्तु	वास करने योग्य भूमि
गोचर	चारा योग्य भूमि
अप्रहत	जंगली भूमि

- इस काल में नालंदा, वैशाली आदि स्थानों से श्रेणियों, सार्थवाहों आदि की मुहरें शिल्पियों की संगठनात्मक गतिविधियों को प्रदर्शित करती हैं।
- गुप्त शासकों के द्वारा सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएं जारी की गई जिन्हें अभिलेखों में 'दीनार' कहा गया है।
- फाह्यान के अनुसार, सामान्य लोग मुद्रा के रूप में कौड़ियों का प्रयोग करते थे।

सुदर्शन झील

- सुदर्शन झील (गुजरात के गिरनार में स्थित) का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र प्रान्त के राज्यपाल पुष्यमित्र वैश्य ने पश्चिमी भारत में सिंचाई के लिए करवाया था।
- अशोक के समय में यवन तुषाष्प ने भी इस झील पर बांध का निर्माण करवाया था।
- शक महाक्षत्रप रुद्रदामन (130-150 ई.) के समय पहली बार यह बांध टूट गया, जिसका पुनर्निर्माण उसने अपने राज्यपाल सुविशाख के निर्देशन में करवाया था।
- जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात) से पता चलता है कि स्कन्दगुप्त के शासनकाल में भारी वर्षा के कारण सुदर्शन झील का बांध फिर टूट गया था तब इस झील का पुनरुद्धार का कार्य सौराष्ट्र प्रांत के गवर्नर पर्णदत्त का पुत्र चक्रपालित द्वारा सम्पन्न किया गया था।
- स्कन्दगुप्त ने झील के किनारे विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया था।

गुप्तकालीन कला एवं साहित्य

- गुप्तकाल को कला एवं साहित्य की दृष्टि से 'स्वर्ण काल' माना जाता है।

गुप्तकालीन प्रसिद्ध मंदिर	
मंदिर	**स्थान**
भूमरा का शिव मंदिर	नागोद (मध्य प्रदेश)
तिगवा का विष्णु मंदिर	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
देवगढ़ का दशावतार मंदिर	झाँसी (उत्तर प्रदेश
नचना कुठार का पार्वती मंदिर	पन्ना (मध्य प्रदेश)
भीतर गाँव का मंदिर	कानपुर (उत्तर प्रदेश)

- गुप्तकाल में पाटलिपुत्र, मथुरा व सारनाथ मूर्तिकला के प्रमुख केंद्र थे।
- गुप्तकाल में चित्रों के अवशेषों को बाघ अजन्ता तथा बादामी की गुफाओं में देखा जा सकता है। अजन्ता की गुफा संख्या 16, 17 एवं 19 गुप्तकालीन है।

गुप्तकालीन प्रसिद्ध साहित्य एवं साहित्यकार

साहित्य	साहित्यकार	वर्णित विषय
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रेम-कथा
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	अग्निमित्र तथा मालविका की प्रेमकथा
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	पुरूरवा एवं उर्वशी की प्रेम कथा
स्वप्नवासवदत्ता	भास	उदयन् तथा वासवदत्ता की कथा
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित कथा
देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त	चन्द्रगुप्त व ध्रुवस्वामिनी के विवाह का वर्णन है
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	ब्राह्मण चारूदत्त तथा गणिका वसंतसेना की कहानी

चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्न

1. धन्वन्तरि	नवरत्नों में इनका स्थान सर्वोपरि था। ये एक प्रसिद्ध वैद्य थे। इनके रचित नौ ग्रंथ पाये जाते हैं। वे सभी आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र से संबंधित हैं। रोगनिदान, वैद्य चिंतामणि, विद्याप्रकाश चिकित्सा, धन्वंतरि निघण्टु, वैद्यक भास्करोदय तथा चिकित्सा सार संग्रह इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। चिकित्सा में ये बड़े सिद्धहस्त थे। इनका काम युद्ध में घायल सैनिकों की शल्य चिकित्सा करना था। ये 'सुश्रुतसंहिता' के रचयिता सुश्रुत के गुरु भी थे।
2. क्षपणक	ये एक संन्यासी थे। इन्होंने कुछ ग्रंथ लिखे जिनमें 'भिक्षाटन' ही उपलब्ध बताया जाता है।
3. अमरसिंह	ये प्रकाण्ड विद्वान थे। इनका प्रमुख ग्रन्थ 'अमरकोश' है। इसे विश्व का पहला समान्तर कोश माना जाता है। इस कोश में करीब दस हजार नाम हैं।
4. शंकु	इनका पूरा नाम 'शंकुक'/शङ्कुक है। इनका एक ही काव्य-ग्रन्थ 'भुवनाभ्युदयम्' बहुत प्रसिद्ध रहा है। इनको संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान माना जाता है।
5. वेतालभट्ट	विक्रम और वेताल की कहानी जगतप्रसिद्ध है। ये 'वेताल पंचविंशति' के रचयिता थे। 'वेताल-पच्चीसी' से ही यह सिद्ध होता है कि राजा विक्रमादित्य के वर्चस्व से वेतालभट्ट कितने प्रभावित थे। इन्होंने विक्रम-वेताल के माध्यम से विक्रमादित्य के साहस और पराक्रम को कथाओं में पिरोया है।
6. घटखर्पर	ये विक्रमादित्य के नवरत्नों में संस्कृत के ज्ञाता थे। ये संस्कृत के 'यमक' और 'अनुप्रास' के विशेष ज्ञाता थे। इनकी रचना का नाम 'घटखर्पर काव्यम्' है इनका दूसरा ग्रंथ 'नीतिसार' है।
7. कालिदास	ऐसा माना जाता है कि कालिदास सम्राट विक्रमादित्य के प्राणप्रिय कवि थे। उन्होंने भी अपने ग्रंथों में विक्रम के व्यक्तित्व का उज्ज्वल स्वरूप निरूपित किया है। वह न केवल अपने समय के अप्रतिम साहित्यकार थे अपितु आज तक कोई उन जैसा अप्रतिम साहित्यकार उत्पन्न नहीं हुआ है। उनके चार काव्य और तीन नाटक काफी प्रसिद्ध हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् उनकी सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाती है।
8. वराहमिहिर	ये प्राचीन भारत के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। इन्होंने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया है। इनमें-सूर्यसिद्धांत, बृहज्जातक, वृहत्संहिता, पंचसिद्धांत कारिका, विवाह पटल, लघुजातक 'योग यात्रा' आदि मुख्य रचनाएं हैं।
9. वररुचि	कालिदास की भांति ही वररुचि भी अन्यतम काव्य रचनाकारों में गिने जाते हैं। पत्रकौमुदी, सदुक्तिकर्णामृत, सुभाषितावलि इनकी प्रमुख रचनाओं में गिनी जाती हैं।

नोटः चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्नों के अलावा इतिहास में सम्राट अकबर के नवरत्न, शिवाजी के अष्टप्रधान और कृष्णदेव राय के दरबार में अष्टदिग्गज होते थे।

थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश

- पुष्यभूति वंश का संस्थापक पुष्यभूति था। प्रभाकर वर्द्धन इसवंश प्रभावशाली शासक था।
- राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन थानेश्वर की गद्दी पर बैठा।
- ह्वेनसांग हर्ष को 'शिलादित्य' के नाम से संबोधित करता है।
- हर्ष ने शशांक को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार किया।
- ऐहोल प्रशस्ति के अनुसार, हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के बीच नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ।
- हर्ष के पूर्वज शिव एवं सूर्य के उपासक थे। परन्तु ह्वेनसांग से मिलने के बाद हर्ष बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राजाश्रय दिया।
- हर्ष ने कन्नौज एवं प्रयाग में विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया था।
- हर्ष का दरबारी कवि बाणभट्ट ने हर्षचरित एवं कादंबरी की रचना की थी।
- प्रियदर्शिता, रत्नावली एवं नागानंद ग्रन्थों की रचना हर्ष ने स्वयं किया था।

ह्वेनसांग का भारत वर्णन

- चीन यात्री ह्वेनसांग स्थल मार्ग से हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आया था।
- वह नालंदा के बौद्ध विश्वविद्यालय में पढ़ने और भारत से बौद्ध ग्रंथ संग्रह करने के उद्देश्य से भारत आया था।
- ह्वेनसाग ने अपना ग्रंथ 'सी यू की' के नाम से लिखा।
- ह्वेनसांग को 'यात्रियों का राजकुमार' कहा जाता है।

बंगाल का पाल वंश

- हर्षवर्धन के साम्राज्य के विघटन के पश्चात् आठवीं शताब्दी के मध्य में पूर्वी भारत में पाल वंश का उदय हुआ जिसका संस्थापक गोपाल था।
- गोपाल के बाद उसका पुत्र धर्मपाल सिहासन पर बैठा। उसने कन्नौज पर आक्रमण कर चक्रायुद्ध को कन्नौज का शासक नियुक्त किया और 'उत्तरापथस्वामिन' की उपाधि धारण की।
- धर्मपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने भागलपुर में विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा सोमपुर महाविहार की स्थापना की।
- धर्मपाल के बाद देवपाल गद्दी पर बैठा इसके शासनकाल में अरब यात्री सुलेमान भारत आया था।
- जावा के शासक बालपुत्रदेव के आग्रह पर देवपाल ने नालंदा में बिहार हेतु पांच गाँव अनुदान में दिया।
- महिपाल के शासन काल में चोल शासक राजेंद्र चोल ने बंगाल पर आक्रमण किया और पराजित किया।
- महिपाल को पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहा जाता है।
- बौद्ध विद्वान शांतरक्षित एवं अतीश 'दीपांकर' पाल वंश के शासनकाल में ही तिब्बत गए थे।

बंगाल का सेन राजवंश

- सेन राजवंश की स्थापना सामंतसेन ने 'राढ़' नामक स्थान पर की।
- सामंतसेन का उत्तराधिकारी विजयसेन था। श्री हर्ष नामक कवि ने उसकी प्रशंसा में विजयप्रशस्ति काव्य की रचना की।
- बल्लालसेन, विजयसेन का उत्तराधिकारी था। बल्लालसेन को बंगाल में जाति प्रथा तथा कुलीन प्रथा को संगठित करने का श्रेय प्राप्त है।
- बल्लालसेन ने 'दानसागर' ग्रंथ की रचना किया था। और 'अद्भुतसागर' की रचना को प्रारंभ किया था किंतु उसे पूर्ण नहीं कर पाया।
- बल्लालसेन ने गौडेश्वर, निःशंकशंकर व परममाहेश्वर की उपाधियां धारण की थी।
- बल्लालसेन का उत्तराधिकारी लक्ष्मणसेन था। इसने एक अन्य राजधानी लक्ष्मणवती (लखनौती) की स्थापना किया।
- लक्ष्मणसेन ने गहड़वाल शासक जयचंद को पराजित किया था।
- सन् 1202 में बख्तियार खिलजी ने लखनौती पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया।
- लक्ष्मण सेन ने बल्लालसेन द्वारा प्रारंभ किए गए 'अद्भुतसागर को पूरा किया। श्रीधर उसका दरबारी कवि था।
- लक्ष्मणसेन के दरबार में गीत गोविंद के लेखक जयदेव, पवनदूत के लेखक धोयी, ब्राह्मणसर्वस्व' के रचयिता हलायुध निवास करते थे।
- लक्ष्मण सेन ने 'परमभागवत' की उपाधि धारण किया तथा लक्ष्मण संवत्' का प्रचलन किया।

स्थान	राजवंश	प्रमुख शासक	उपलब्धि
कन्नौज	मौखरि	हरिवर्मा, ईशानवर्मा, सर्ववर्मा	इन्होंने हूणों को पराजित किया था।
थानेश्वर	पुष्यभूति	पुष्यभूति, प्रभाकरवर्धन राज्वर्धन, हर्षवर्धन	विशाल राज्य स्थापित किया बौद्ध धर्म को प्रश्रय दिया
वल्लभी	मैत्रक	भट्टार्क, धरसेन, ध्रुवसेन प्रथम, धरनपट्ट गुहसेन, शिलादित्य प्रथम	गुप्तोत्तर काल के नवोदित राज्यों पर सबसे लंबे समय तक शासन किया।
बंगाल	चंद्र (गौड़)	शशांक	थानेश्वर एवं कन्नौज शासकों से इसकी शत्रुता थी
मगध	परवर्ती गुप्त	महासेन गुप्त, देवगुप्त, आदित्य सेन	मौखरियों से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता

मध्यकालीन बिहार

मध्यकालीन बिहार के प्रमुख अभिलेख

- बुद्ध सेन का बोधगया अभिलेख
- बिहारशरीफ का प्रस्तर अभिलेख
- संग्रामगुप्त का पंचों ताम्रपत्र अभिलेख
- मुहम्मद-बिन-तुगलक का बेनीबन अभिलेख
- फिरोजशाह तुगलक का राजगीर अभिलेख
- खड़गपुर (मुंगेर) के राजा का अभिलेख
- भभुआ में शेरशाह का अभिलेख
- खारवार प्रमुख प्रताप धवल के तीन अभिलेख

बिहार में तुर्क शासन

- बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी था।
- 'बख्तियारपुर' शहर का संस्थापक बख्तियार खिलजी को ही माना जाता है।
- बख्तियार खिलजी की महत्त्वपूर्ण सफलता ओदंतपुरी बिहार की विजय थी। तारानाथ के अनुसार, उसने नालंदा विश्वविद्यालय को भी नष्ट किया था।
- बख्तियार खिलजी ने जयपुर (जयनगर) के गुप्त राजाओं को भी पराजित किया तथा मिथिला के कर्नाट शासक नरसिंहदेव को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।
- बख्तियार खिलजी की हत्या अलीमर्दान खिलजी ने किया।
- 1225 ई. में इल्तुतमिश ने बिहार शरीफ तथा बाढ़ पर अधिकार किया। इस दौरान उसने बिहार के शासक हिसामुद्दीन इवाज को राजमहल की पहाड़ियों में हराया।
- इल्तुतमिश ने 'मलिक अलाउद्दीन जानी' को बिहार में अपना प्रथम सूबेदार नियुक्त किया था।
- सैफुद्दीन ऐबक तथा तुगान खाँ भी इल्तुतमिश के द्वारा नियुक्त सूबेदार थे।
- सन् 1279 में बंगाल में तुगरिल खा ने विद्रोह किया जिसका दमन बलबन ने किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1297 ई. में दरभंगा के राजा सक्रसिंह के विरुद्ध शेख मोहम्मद इस्माइल के नेतृत्व में सैनिक अभियान भेजा जिसमें सक्रसिंह पराजित हुआ।
- गयासुद्दीन तुगलक ने 1324 ई. में बंगाल अभियान से वापसी के दौरान कर्नाट वंश के अंतिम शासक हरिसिंह देव को हराया।
- मोहम्मद बिन तुगलक के समय बिहार का सूबेदार मज्दुल मुल्क था।
- मोहम्मद बिन तुगलक के समय तिरहुत को तुगलकपुर' नाम दिया गया। यहाँ से मोहम्मद तुगलक का एक सिक्का प्राप्त हुआ है।
- 1394 में नासिरुद्दीन महमूद द्वारा ख्वाजा जहां को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया गया।
- लोदी शासन काल में सिकंदर लोदी ने दरिया खाँ नूहानी को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया।
- सूफी संत हजरत शर्फुद्दीन याहिया मनेरी के मल्फूजात और मनाकिबुल असफिया से बिहार में तुगलक शासन की जानकारी मिलती है।
- बिहार शरीफ में पहाड़ी पर स्थित मलिक बया का मकबरा तुगलककालीन स्थापत्य का एक सुंदर नमूना है जिसका आकर्षण इसका गुम्बद है।

मिथिला के कर्नाट शासक

- मिथिला (तिरहुत) में नन्यदेव ने कर्नाट वंश की स्थापना किया तथा 'कर्नाटकुलभूषण' की उपाधि धारण की।
- कर्नाट वंश के शासक नरसिंहदेव के शासनकाल में बख्तियार खिलजी का आक्रमण हुआ।
- हरिसिंह देव के शासनकाल में गयासुद्दीन तुगलक का बंगाल अभियान हुआ जिसमें हरिसिंह देव नेपाल पलायन कर गया।
- हरिसिंहदेव के समय पंजी-प्रबंध का विकास हुआ।

बिहार में चेरो राजवंश

- पाल वंश के पतन के पश्चात् बिहार में जनजातीय राज्यों का उदय हुआ जिसमें चेरो राजवंश प्रमुख था।
- चेरो राज ने शाहाबाद, सारण, चम्पारण, मुजफ्फरपुर एवं पलामू जिलों में शक्तिशाली राज्य की आधारशिला रखी।
- 1611 ई. में उज्जैनों तथा चेरो राजाओं के मध्य युद्ध हुआ जिसमें नारायण मल के नेतृत्व में उज्जैन वंशीय राजा विजयी हुए।
- चेरो राजा फूलचंद को जगदीशपुर के मेले को आरंभ करने का श्रेय दिया जाता है।
- मोदिनी राय पलामू क्षेत्र में चेरों का प्रमुख राजा था।
- 1660 ई. में चेरो राज्य को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

बिहार में अफगान शासन

- शेरशाह (फरीद खां) बिहार में सहसराम के जागीरदार हसन खाँ सूर का पुत्र था जिसे बहार खाँ की शेर से रक्षा करने के कारण 'शेर खाँ' की उपाधि प्रदान की गई थी।
- 1534 ई. में शेरशाह ने सूरजगढ़ के युद्ध में बंगाल के शासन गियासुद्दीन महमूद को हराया।
- 26 जून, 1539 को शेरशाह ने चौसा के युद्ध में मुगल शासक हुमायूं को परास्त करने के बाद शेरशाह की उपाधि धारण कर सिहासन पर बैठा।
- कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध (1540) में हुमायूं को पराजित करने के बाद शेरशाह ने आगरा में विधिवत राज्याभिषेक करवाया।
- शेरशाह ने डाक प्रथा तथा ग्रैंक ट्रंक रोड का निर्माण करवाया।
- मारवाड़ अभियान के दौरान शेरशाह ने कहा कि 'मुट्ठी भर बाजरे के लिये वह हिंदुस्तान की बादशाहत खो बैठता'।

- शेरशाह ने भूमि की माप के लिये सिकंदरी गज एवं सन की डंडी (32 अंक) का प्रयोग किया तथा कबूलियत तथा पट्टा प्रथा की शुरुआत किया।
- शेरशाह ने चाँदी का रुपया (180 ग्रेन) और ताँबे का दाम (380 ग्रेन) चलाया। चाँदी का रुपया तथा तांबे के दाम में 1 :64 का अनुपात था।
- शेरशाह का मकबरा सहसराम में स्थित है जिसका निर्माण कार्य का आरंभ शेरशाह ने किया किन्तु पूरा इस्लाम शाह ने किया।

शेरशाह द्वारा लड़े गए प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	युद्ध का परिणाम
सूरजगढ़ युद्ध	1534	सूरजगढ़ की लड़ाई (महमूद खाँ को पराजित किया)
चौसा का युद्ध	1539	चौसा (बक्सर के समीप) की निर्णायक लड़ाई (शेरशाह और हुमायूँ के बीच)। इसी विजय के बाद शेर खां ने 'शेरशाह' की उपाधि धारण की। इस लड़ाई के पश्चात् हुमायूँ ने भागकर ईरान में शरण ली।
कन्नौज (बिलग्राम युद्ध)	1540	बिलग्राम या कन्नौज का युद्ध, शेरशाह ने 1541 ई. में पटना को बिहार की पुनः राजधानी बनाया। शेरशाह ने चांदी का रुपया (178 ग्रेन) और तांबे का दाम (380 ग्रेन) का प्रचलन शुरू किया।
कालिन्जर युद्ध	1545	कलिंजर अभियान में शेरशाह की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र इस्लाम शाह 27 मई 1545 ई. में गद्दी पर बैठा।

अकबर कालीन बिहार के प्रमुख सूबेदार

- खान-ए-खानम मुनीम खां
- राजा मान सिंह
- सईद खान
- मुजफ्फर खान
- खान-ए-आजम मिर्जा अजीज कोका
- असद खान

जहांगीर कालीन बिहार के सूबेदार

वर्ष	नाम
• 1605	बाज बहादुर (लाल बेग)
• 1607	इस्लाम खान
• 1608	अफजल खान (अब्दुर्रहमान)
• 1613	जफर खान
• 1615	इब्राहिम खां काकर
• 1617	कुली खान द्वितीय
• 1618	मुकर्रब खान
• 1621	शहजादा परवेज
• 1622	खानेदुर्रान (बैरम बेग)
• 1626	मिर्जा रुस्तम सफाबी
• 1627	खान-ए-आलम
• 1628	सैफ खान

बिहार में सिख धर्म

- सिख धर्म का संबंध बिहार में बहुत पुराना रहा है। गुरु नानक द्वारा गया, राजगीर, पटना, मुंगेर, भागलपुर एवं कहलगांव आदि की यात्रा करते हुए राजमहल जाने की चर्चा अनेक विद्वानों ने की है।
- गुरु नानक ने इन क्षेत्रों में धर्म का प्रचार-प्रसार भी किया तथा अनेक शिष्य बनाए।
- सिखों के 9वें गुरु श्री तेग बहादुर का बिहार में पदार्पण 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। वे सहसराम तथा गया से होते हुए पटना पहुंचे।
- पटना प्रवास के दिनों में ही उन्हें असम की ओर प्रस्थान करना पड़ा, जहां उन्हें सम्राट औरंगजेब के राजपूत सेनापति को सहायता देनी थी। इसलिए वे अपनी गर्भवती पत्नी गुजरी देवी को अपने भाई कृपालचंद्र के पास पटना में ही छोड़ गए। इसके कुछ समय बाद ही पटना में 22 दिसम्बर, 1666 ई. को गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ जो आगे चलकर सिखों के 10वें गुरु 'गुरु गोविंद सिंह' बनें।
- लगभग साढ़े चार वर्ष की आयु में बालक गुरु गोविन्द सिंह पटना को छोड़कर अपने पिता की आज्ञा पर पंजाब में आनंदपुर के लिए प्रस्थान कर गए।
- गुरुपद ग्रहण करने के उपरांत इन्होंने अपने मसंद (धार्मिक प्रतिनिधि) बिहार भेजे।
- आगे चलकर इन्होंने मसंद व्यवस्था को समाप्त कर दिया।
- 1708 ई. में गुरु की मृत्यु के उपरान्त इनकी पत्नी, माता साहिब देवी के प्रति भी बिहारी सिखों ने काफी सहयोगात्मक रुख रखा।
- पटना में गुरु गोविंद सिंह का जन्मस्थान सिखों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है।

नोटः 31 दिसम्बर, 2016 से 5 जनवरी, 2017 तक बिहार की राजधानी पटना में गुरु गोविन्द सिंह के 350वें जन्मोत्सव/प्रकाशपर्व का आयोजन किया गया था जिसमें लाखों सिख श्रद्धालुओं ने भाग लिया था।

आधुनिक बिहार

बिहार में यूरोपीय कंपनियाँ

कंपनी का नाम	स्थापना वर्ष	उत्पाद
पुर्तगाली फैक्ट्री	17वीं सदी पूर्वार्ध	सूती वस्त्र
डच (नीदरलैण्ड) फैक्ट्री	1632	अनाज, शोरा, सूती वस्त्र
ब्रिटिश फैक्ट्री	1651	नील, सूती वस्त्र
डेन फैक्ट्री	1774	सूती वस्त्र

प्रमुख जनजातीय विद्रोह

- **नोनिया विद्रोह (1770-1800 ई.)**–नोनिया विद्रोह बिहार के मुख्य शोरा/सोडा उत्पादक केन्द्र हाजीपुर, तिरहुत, सारण और पूर्णिया में हुआ था।
- **तमाड़ विद्रोह (1789-1832 ई.)**–छोटानागपुर के उरांव जनजाति द्वारा जमींदारों और साहूकारों के शोषण के खिलाफ विद्रोह की शुरुआत हुई जो 1832 ई. तक चलता रहा। अंततः इस विद्रोह को अंग्रेजों ने कुचल दिया।
- **चेरो विद्रोह (1771-72 ई.)**–पलामू शासक चिरंजीत राय एवं उनके दीवान जयनाथ सिंह ने पलामू की राजगद्दी के दावेदार गोपालराम की ओर से लड़ रहे अंग्रेजों के विरुद्ध एक विद्रोह किया जिसे चेरो विद्रोह की संज्ञा दी जाती है।
- **कोल विद्रोह (1831-32 ई.)**–छोटानागपुर क्षेत्र में हुआ यह विद्रोह भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण विद्रोह था। वास्तव में यह मुंडों का विद्रोह था जिसमें 'हो', उरांव एवं अन्य जनजातियों के लोग शामिल थे। इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि संबंधी असंतोष था। इस विद्रोह के प्रमुख नेता बुद्धो भगत, विन्दराय, सिंगराय एवं सुर्गा मुंडा थे।
- **भूमिज विद्रोह (1832-33 ई.)**–यह विद्रोह वीरभूम के जमींदार गंगा नारायण सिंह के नेतृत्व में किया गया। इस विद्रोह का कारण ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी लगान व्यवस्था थी। इसका प्रभाव वीरभूम एवं सिंहभूम दोनों क्षेत्रों में था।
- **संथाल विद्रोह (1855-56 ई.)**–संथाल आदिवासियों का यह विद्रोह भागलपुर जिला के राजमहल के भगनीडीह से 30 जून, 1855 को प्रारंभ हुआ। संथाल विद्रोह का प्रभाव क्षेत्र पश्चिम बंगाल के वर्धमान से लेकर बिहार के भागलपुर तक था। इस विद्रोह के नेता सिद्धों, कान्हू, चांद और भैरव थे। ये चारों सहोदर भाई थे। इस विद्रोह का दमन कैप्टन एलेक्जेण्डर और लेफ्टिनेंट थॉमसन ने किया था।
- **लोटा विद्रोह (1856 ई.)**–यह विद्रोह 1857 की क्रांति के एक साल पूर्व मुजफ्फपुर जेल के कैदियों द्वारा लोटा के लिए किया गया था। यहां प्रत्येक कैदी को पीतल का लोटा दिया जाता था, लेकिन सरकार ने निर्णय लिया कि पीतल की जगह मिट्टी के बर्तन दिए जाएंगे। इसके बाद वहां के कैदियों ने विद्रोह कर दिया। इसे लोटा विद्रोह के नाम से जाना जाता है।
- **मुंडा विद्रोह (1899-1900 ई.)**–इस आंदोलन के मुख्य प्रवर्तक बिरसा मुंडा था। मुंडा जनजातीय विद्रोह सबसे संगठित एवं विस्तृत था, इस विद्रोह को उलगुलान या महान हलचल की संज्ञा दी जाती है।

→ मुंडा विद्रोह का मुख्य उद्देश्य आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति में परिवर्तन एवं पुनरुत्थान लाना था। यह आंदोलन एक सुधारवादी प्रयास के रूप में आरंभ हुआ था।

→ बिरसा ने नैतिक आचरण की शुद्धता, आत्मसुधार एवं एकेश्वरवाद का उपदेश दिया। इस आंदोलन के विरुद्ध सरकार ने दमन चक चलाया और 3 मार्च, 1900 ई. को चक्रधरपुर में बिरसा को गिरफ्तार कर लिया गया और 2 साल की सजा दे दी गई लेकिन 9 जून, 1900 को रांची कारागार में हैजा रोग के कारण उनकी मृत्यु हो गई, जहां अब बिरसा मुंडा की आदमकद प्रतिमा लगाई गई है।

→ बिरसा मुण्डा के अनुयायी उन्हें धरती आबा का अवतार मानते थे।

→ वर्तमान में बिहार, झारखण्ड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

- **ताना भगत आंदोलन (1914 ई.)**–इस आंदोलन का शुभारंभ अप्रैल, 1914 को गुमला जिले के विशनपुर प्रखंड के टोली ग्राम से हुआ था। यह उराँव जनजातियों द्वारा आरंभ किया गया आंदोलन था।

→ यह आंदोलन अपने शुरुआती चरण में कुरुख धर्म (उरांव का मूल धर्म) के नाम से जाना गया।

→ इस आंदोलन के प्रमुख नेता जतरा भगत थे। उसने उरांवों में धार्मिक सुधार संबंधी कार्यों पर जोर दिया और सिर्फ धर्मेश (उरांवों के देवता) की आराधना पर बल दिया। साथ ही पशु बलि, मांस-मदिरा एवं कुरीतियों के त्याग पर भी उसने बल दिया।

→ जतरा भगत के नेतृत्व में ऐलान हुआ कि मालगुजारी नहीं देंगे, बेगारी नहीं करेंगे और कर नहीं देंगे। उसने दिकुओं (बाहरी लोग) के यहां मजदूरी न करने का अभियान चलाया, जिससे 1916 में उन्हें जेल में कैद कर दिया गया।

→ प्रायः आदिवासियों में जतरा भगत को बिरसा मुंडा का ही एक रूप माना जाता है।

प्रमुख जनजातीय आंदोलन

वर्ष	आंदोलन	नेता
1771-72	चेरो विद्रोह	जयनाथ सिंह
1831-1832	कोल विद्रोह	बुद्धो भगत, विन्दराय, सिंगराय, सुर्गा मुंडा
1832-1833	भूमिज विद्रोह	गंगा नारायण सिंह
1855-1856	संथाल विद्रोह	सिद्धू, कान्हू, चांद एवं भैरव
1874	खरवार आंदोलन	भागीरथ मांझी
1899-1900	मुंडा आंदोलन	बिरसा मुंडा
1914	ताना भगत आंदोलन	जतरा भगत

- **संथाल विद्रोह**–संथाल विद्रोह जमींदारों एवं साहूकारों के खिलाफ विद्रोह था। संख्यात्मक रूप से बिहार की सबसे बड़ी अनुसूचित जनजाति संथालों की थी। संथाल विद्रोह का प्रभाव भागलपुर से लेकर राजमहल की पहाड़ी तक विस्तृत था जिसे दामिन-ए-कोह (पहाड़ियों का राज) के नाम से जाना जाता है।
- **साफाहोड़ आंदोलन-** साफाहोड़ आंदोलन का आरंभ 1874-75 ई. में हुआ था। इस आंदोलन का नेतृत्व लाल हेम्ब्रम (लाल बाबा) ने किया था यह खरवार आंदोलन की एक शाखा थी जिसने चारित्रिक शुद्धता पर बल दिया था।